Topic – MEANING AND DEFINITIONS OF SOCIOLIZATION

(समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ)

Q.1 – मानव शिशु जन्म के समय किसी भी मानव समाज में भाग लेने योग्य नहीं होता है। वह केवल प्राणीशास्त्रीय इकाई के रूप में इस प्रकार संसार में आता है जो केवल रक्त, मांस एवं हड्डियों से बना एक जीवित पुतला मात्र होता है। उसमें किसी प्रकार के सामाजिक गुण नहीं होते। वह न तो सामाजिक और न तो असामाजिक और न समाज विरोधी हो। समाज के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, मूल्यों एवं संस्कृति से वह अनभिज्ञ होता है। वह यह नहीं जानता है कि किसके प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए और समाज उससे क्या अपेक्षाएं रखता है, किन्तु वह कुछ शारीरिक क्षमताओं के साथ जन्म लेता है। इन क्षमताओं के कारण ही वह बहुत कुछ सीख लेता है, समाज का क्रियाशील सदस्य बन जाता है और संस्कृति को ग्रहण करता है, लेकिन सीखने की क्षमता सामाजिक सम्पर्क से ही विकसित होती है। जैसे मानव में भाषा का प्रयोग करने की क्षमता होती है जो समाज के सम्पर्क में ही व्यवहारिक रूप धारण करती है। सामाजिक सम्पर्क के कारण ही व्यक्ति समाज के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, मूल्यों, विश्वासों, संस्कृति एवं सामाजिक गुणों को सीखता है और एक सामाजिक प्राणी का दर्जा प्राप्त करता है। सामाजिक सीख की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं। इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया प्राणीशास्त्रीय प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदल देती है; मानव को पशु प्राणी को सामाजिक प्राणी में बदल देता है। अतः यह मानव को मानव को सच्चा सदस्य करने वाली प्रक्रिया है।

समाजीकरण का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definitions of Socialization)

समाजशास्त्र में समाजीकरण नामक अवधारणा का प्रयोग इन प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है

Ajanta PRODUCTS Officer

जिनके द्वारा व्यक्ति को सामाजिक - सांस्कृतिक संसार से परिचित कराया जाता है। इस अर्थ में सामाजीकरण वह विधि है जिसके द्वारा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने समूह एवं समाज के मूल्यों, जनरीतियों, लोकाचारों आदर्शों एवं सामाजिक उद्देश्यों को सीखता है। सामाजीकरण के विभिन्न परिभाषाओं से यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी।

ग्रीन के शब्दों में, "सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चा सांस्कृतिक विशेषताओं, आत्मपन (Selfhood) और व्यक्तित्व को प्राप्त करता है।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट है कि सामाजीकरण से बच्चा संस्कृति की विशेषताओं को सीखता है, उसके अनुसार अपने आचरण को ढालता है और व्यक्तित्व का विकास करता है।

गिलिन और गिलिन लिखते हैं, "सामाजीकरण से हमारा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति, समूह में एक क्रियाशील सदस्य बनता है, समूह के कार्यविधियों से समन्वय स्थापित करता है, उसकी परम्पराओं का ध्यान रखता है और सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूलन करके अपने साथियों के प्रति सहनशक्ति की भावना विकसित करता है।" इस परिभाषा में सामाजीकरण को एक प्रक्रिया के रूप में दर्शाया गया है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह का सक्रिय सदस्य बनता है।

किम्बाल यंग के अनुसार, "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता तथा समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है और जिसके द्वारा उसे समाज के मूल्यों और मानकों को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है।"

जॉनसन के अनुसार "सामाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करने के योग्य बनाती है।" इस प्रकार जॉनसन सामाजीकरण को सीखने की प्रक्रिया मानते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में अपनी भूमिकाओं को निभाना सीखता है।

स्टीवर्ट एवं ग्लिन के अनुसार, "समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग अपनी संस्कृति के विश्वासों, अभिवृत्तियों मूल्यों और प्रथाओं को ग्रहण करते हैं।"

फिचर (Fitcher) के अनुसार, "सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को स्वीकार

करता है और उनसे अनुकूलन करना सीखता है।"
मिचेल भी जॉनसन की तरह समाजीकरण को सीखने की एक प्रक्रिया मानते हैं।

न्यूमेर (Newmeyer) के अनुसार, "एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया का नाम ही समाजीकरण है।"

ब्रूम तथा सेल्जनिक के अनुसार, "समाजीकरण के दो पूरक अर्थ हैं — संस्कृति का हस्तान्तरण और व्यक्तित्व का विकास।" इससे स्पष्ट है कि समाजीकरण द्वारा एक व्यक्ति अपनी संस्कृति को सीखता है। संस्कृति पुरानी पीढ़ी द्वारा नयी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। संस्कृति को सीखने से ही बच्चे के व्यक्तित्व का विकास होता है।

टालकॉट पारसंस (Talcott Parsons) - व्यक्ति द्वारा सामाजिक मूल्यों को सीखने और उन्हें आन्तरीकृत (Internalized) करने को ही समाजीकरण कहते हैं।

हारालाम्बोस के अनुसार, "वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति को सीखते हैं, समाजीकरण के नाम से जानी जाती है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह अथवा समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को ग्रहण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और समाज का क्रियाशील सदस्य बनता है। समाजीकरण द्वारा बच्चा सामाजिक प्रतिमानों को सीखकर उनके अनुरूप आचरण करता है, इससे समाज में नियंत्रण बना रहता है।

ब्रूम तथा सेल्जनिक का मत है कि समाजीकरण की प्रक्रिया के तीन प्रमुख पहलू हैं — सावयव (Organism) व्यक्ति (Individual), तथा समाज (Society) सावयव या शरीर रचना ही व्यक्ति को क्षमता प्रदान करती है जिसकी सहायता से मानव अन्य लोगों के व्यवहारों को सीखता है और भाषा द्वारा उन्हें व्यक्त करता है। व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया का वास्तविक आधार है क्योंकि व्यक्ति में आत्म का विकास हुए बिना समाजीकरण की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकती। समाज ही वह क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति विभिन्न प्रकार से अन्तःक्रिया करता है।

स्टीवर्ट एवं गिलन ने समाजीकरण के तीन आवश्यक तत्व माने हैं — (i) अन्तःक्रिया, (ii) भावात्मक स्वीकृति

(iii) संचार या भाषा दूसरे व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया करने के दौरान ही व्यक्ति सही व्यवहार करना सीखता है। वह यह भी सीखता है कि किस प्रकार के व्यवहार समाज द्वारा स्वीकृत है और किस प्रकार के निषिद्ध। वह अपने अधिकारों, दायित्वों एवं कर्तव्यों को भी सीखता है। सीखने का तात्पर्य काय संचार एवं भाषा के द्वारा सरलता से किया जाता है। चूँकि मानव एक भावात्मक और बौद्धिक प्राणी है, अतः वह प्रेम पाने व प्रेम प्रदान करने का अनुभव भी प्राप्त करता है। भावात्मक वातावरण में समाजीकरण शीघ्र होता है। इस प्रकार समाजीकरण के लिए ये तीनों तत्व आवश्यक एवं अपरिहार्य है।

समाप्त